Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

धं० ५५

No. १८२९ क

Title सप्तश्लोकी गीता सटीका (हिंदी)

Author

Extent १३ पत्र Age

Subject वेदान्त

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

# सप्तश्लोकी गीता

नं. १७२९

6665
F 13
mixed complete

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

५८

ग्रं १६२८ का
सं ६ श्लोकों में ला
१२ पन्नों में
केवल

श्री रणबीर पुस्तकालय
५५
८११
© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स
१

ॐश्रीभगवानुवाच॥श्लोक॥ॐमि
त्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्माम
नुस्मरन्यःप्रयातित्यजन्देहंसयाति

परमोगति॥ १॥टीका॥ ॐ है ब्रह्म
न॥ ॐकार ब्रह्म रका मे ब मेरा
है॥ सो ॐकार ब्रह्म है॥ इसे ब्रह्म स्वरूप ॐ
कार का जप मेरा है॥ ॐकार ही
के व्यवहार लागे है॥ जो इसम

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स कारकाजपकरनैहै ॥ सोनोदे
२ हकात्यागकरपरमगतिको
प्रापतहोतेहै ॥१॥ मूलका ॥ सर्व
तःपाणिपादंतत्सर्वतोक्षिशि
रोमुखं ॥ सर्वतःश्रुतिमल्लोके

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

सर्वमांहृत्वतिष्ठति॥२ ॥टीका॥
हेअर्जुनतूंनिश्चयरूपभगवान
काहै॥सोकैसाहै॥सोसुणा॥स
र्वत्रतिसकेहाथअरुचरणहै
सर्वत्रतिसकेसिरहै॥अरुसर्वा

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स
२

3

त्रतिसकेमुखहै॥ अरुसर्वत्रति
सकेकानहै॥ अरुनिरगुणजी
नहै॥ अरुगुणभोक्ताहै॥ सर्वत्र
सारेविषविषैंव्यापकरिविष
केपररह्याहै॥ तिसविनाकोई

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

वस्तुभीनाही॥तिसविनाकोईः
स्थानीभीनाही॥इसप्रकारविश्व
कोआवृतनकररहाहै॥२॥अर्जुनउ
वाच॥सलोक॥स्थानेहृषीकेशतव
प्रकीर्त्याजगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स
१४

च॥ रतो सि भीता नि दिशो द्रवंति सर्वे नमस्यंति च सिद्ध संघाः॥ टी॰ का॥ हे ह्रषीकेश जी समस्त जगत् तमविषै दैषता हो॥ श्रुजी सारा जगत॥ तमहारी स्तुति करता

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

देषनाहो॥अरुसेमारकौलमा
नामीनमहारीविषेदेषनाहो
अरुनमाराभयमानराषतदेसो
दिमाविषेदोउदोउकरनेमाग
नेभये॥अरुसबहीमिलौकेसम

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स हनूमकोनमस्कारकरनेदेष-

प ताहैं॥३॥श्रीभगवानुवाच॥सलोक॥

5 कविंपुराणमनुशासितारमनो

रणीयांसमनुस्मरेयः॥सर्वस्या-

धातारमचिंत्यरूपमादित्यव-

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

ौंनममाशुरत्नत ॥५॥ टीका ॥ हेअर्जु
नपरमपुरुषजोहैसोसुण ॥ सो
परमपुरुषकैसाहैकवीहै ॥ अरु
पुरातनहै ॥ सभकिसीकोशासता
करणेहाराहै ॥ अणुतेसूक्ष्महै ॥ स

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स मनैकीउतपतनकरणेहाराहै॥
८ चितकरकेचितीनहीजाता॥अ
6 चितरूपहै॥अरुसूर्यकेन्याईतिस
काप्रकाशहै॥अरुप्रज्ञाननामे
प्रेपेरतेहै॥इसरूपकाजोकोई

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

ध्यानकरतेहै॥सोतोऔरभीकु
छकरतेहै॥सोहम॥सलोक॥ऊर्ध
मूलमधःशाखामश्वत्थंप्राहुर
व्ययं॥छंदांसियस्यपर्णानियस्तं
वेदसवेदवित्॥१॥टीका॥श्रीकृस

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स भगवानजीअर्जुनकौंकहतेहे
८ हेअर्जुन॥ इहसंसारवृक्षरूपहे॥
7 इसवृक्षकामूलसुऊपरहै॥ अ
रइसकेशाखानीचैहै॥ अरुउला
टावृक्षहै॥ तिसकाअर्थसुनो॥ ज

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

बमनुषमाताकेगर्भविषेहो॥
ताहै॥तबतिसकासिरतलेहो
ताहै॥सोसिररसकामलमूंड॥
है॥अरुचरणगर्भविषेऊपरहोता
है॥सोचरणहाथरसकीयारा

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स खोहै॥ जबमनुष्यगर्भनेबाहर
८ निकसताहै॥ तबउलटाहोइचा
लताहै॥ ब्रह्मलज्ञाहै॥ सोसिर
ऊपरहोताहै॥ ब्रह्मशाखानलैहै
इसकारणतै॥ उलटाहूवतहै॥ १

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

सकोविनासीकरकहतेहै॥ अ
रुअविनासीकरभीकहतेहै॥ ति
सकाअर्थंहण॥ आत्माअविना
सीहै॥ अरुदेहकौविनासहोता
है॥ इसकारणतेअविनासीहै॥

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स
५

ग्रुरुविनासहोयाहै॥ग्रुरुहृदा॰
कोवेदपढैहै॥जोइसहृदकोप
ढिवाने॥सोईवेदकापढनहार
पंडितहै॥५॥श्लोक॥सर्वस्यचाहं
हृदिसंनिविष्टोमत्तःस्मृतिर्ज्ञा

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

नमपोहनंच॥ वेदैस्चसवैंरह
मेववेद्योवेदांतकृद्वेदविदेव
चाहं॥ द॥ टीका॥ हेअर्जुन॥ हौंहीस
भनोंकेहृदयकमलविषैवैठा
हों॥ हौंहीसभनोंकोंग्यानदेता।

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स हैं॥ अरु सम नो वेदो करि भी ब्र
१० ह्मही को जानते हैं॥ अरु वेद भी
10 हैं उ ही हैं॥ वेदांत रूप भी हैं उ ही
हैं॥ अरु वेदांत के कर्णहारा॥
अरु वेदांत के ज्ञान को जानतो॰

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

ह्नाएजोहैवेदांतेसोनोहेउहीहों
प्ररूवेदांतकाउपदेसकरणेहा
रभीहेउहीहों ॥८॥ स्लोक॥ नन्मा
नामवमनकोमथाजीमोनमा
स्कुरु॥ मामेवैष्यसिसत्येतेप्रति॥

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स ११

ज्ञानेप्रियोसिमे॥९॥टीका॥हेअर्जु
न॥तेअपनेमनकोमेरेविषैलगाव
अरुमेराहीभगतहो॥मेरेहीनिमि
त्तयज्ञभीकरनमस्कारभीमेराका
हीकोकर॥मनकुमारेमेरेविषै।

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

रामहेअर्जुन॥मेरेपरमवचन:

सुण॥मह्रानलस्वपनानकको

कहनाहैं॥नवतेंमेरेविविशाम

होवेगा॥जैसेपानेसूयमैलीन

होताहै॥२हहनोबानसन्सहै॥स्व

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स हहैउभीजानताहै॥किनेंमेराशी
१२ नहै॥१॥सलोक॥योमांगीतासम्
हैनसोनमिक्रुनिर्णाइव॥सोह
मेकेनमलोकेनत्नुनपवनसं
गयः॥८॥टीका॥हेअर्जुनजिस

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

कों मन विषै गीताजी के पाठ क
रने की इछा होवै ॥ सो इह सम स
लोकी गीता का पाठ करै ॥ तिस
को गीताजी के समान फल प्राप्त
होवैगा ॥ हे अर्जुन ॥ तैं मेरा भगत

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri

स
१२

है॥नेरभलेकेनिमित्तगीताजीम
यकरा॥मारसमसलोकीगीता
निकामीहै॥रहीमेरावचनहै॥८
इतिश्रीसमसलोकेगीताटीकासहितसं
॥ मातं ॥

© Dharmartha Trust. Digitized by eGangotri